



ISSN 0973-2616

प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का गृह बुलेटिन

वर्ष 10 अंक 3

www.csir.res.in

मार्च 2022

सीएसआईआर- आईएचबीटी और सैन्य स्टेशन मुख्यालय, होल्टा कैंप, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश के बीच 'कंपोस्ट बूस्टर और प्रभावी माइक्रोबियल (ईएम) समाधान के उत्पादन' पर सामग्री हस्तांतरण समझौता



सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश और सैन्य स्टेशन मुख्यालय, होल्टा कैंप, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश के बीच

16 फरवरी 2022 को 'कंपोस्ट बूस्टर और प्रभावी माइक्रोबियल (ईएम) समाधान के उत्पादन' के लिए एमटीए (सामग्री हस्तांतरण समझौता) पर हस्ताक्षर किए

गए। इस से होल्टा कैंप, स्टेशन मुख्यालय, पालमपुर में कम्पोस्टेबल कचरे की समस्या का समाधान हो सकेगा। मिलिट्री स्टेशन से सभी जैविक कचरे को एकत्र कर कचरा

प्रबंधन स्थल पर खाद बनाने के लिए इकट्ठा किया जाएगा। सामग्री हस्तांतरण समझौते में प्रवेश करने से पहले, दोनों पक्षों ने छह महीने के लिए स्टेशन मुख्यालय, पालमपुर, अपशिष्ट प्रबंधन

संयंत्र में संयुक्त रूप से काम किया है। इस अवसर पर दोनों पक्षों ने कंपोस्टिंग यूनिट के सुचारु संचालन और जैविक कचरे के प्रबंधन और इसके मूल्यवर्धन के लिए अन्य क्षेत्रों में भी इसके विस्तार की

उम्मीद जताई। इस अवसर पर, दोनों पक्ष कंपोस्टिंग इकाई के सुचारु संचालन और अन्य प्रतिष्ठानों में भी जैविक कचरे के प्रबंधन और मूल्यवर्धन के लिए आशान्वित हैं।

सीएसआईआर-निस्पर स्थापना दिवस समारोह

नए स्टार्ट-अप अवसरों से जुड़ी जनजागरूकता और विज्ञान संचार के नवोन्मेषी तरीके विकसित करने की आवश्यकता : केन्द्रीय विज्ञान मंत्री

केन्द्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) विज्ञान और प्रौद्योगिकी, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पृथ्वी विज्ञान, प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोकशिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा तथा अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) के प्रथम स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर कहा कि आजीविका से जुड़े स्थाई स्टार्ट-अप्स में नए भारत

की तस्वीर बदलने की परिवर्तनकारी क्षमता है। इसलिए सरकारी क्षेत्र के बाहर नौकरी और व्यवसाय के नए स्टार्ट-अप अवसरों के बारे में जनजागरूकता फैलाने की आज विशेष आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री सही मायने में एक विज्ञान संचारक हैं और नए परिवर्तनकारी भारत में स्टार्ट-अप संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए उनके पास वैज्ञानिक दृष्टिकोण है।

केन्द्रीय मंत्री डॉ. सिंह ने कहा कि सीएसआईआर-निस्पर का उद्देश्य विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान के दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों में योगदान देना है। भारत जैसे देश में विज्ञान संचार के नवोन्मेषी तरीकों की जरूरत है और यह संस्थान इस उद्देश्य की पूर्ति करने में समर्थ है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की नीति एक मजबूत विज्ञान-प्रौद्योगिकी-नवाचार (एसटीआई) इकोसिस्टम के विकास के साथ ज्ञान-



आधारित अर्थव्यवस्था के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ने की है। एसटीआई और स्टार्ट-अप्स के आपसी तालमेल के फलस्वरूप ग्रामीण विकास तथा युवाओं के लिए आय के अवसरों का सृजन होगा।

15 अगस्त, 2021 को लाल किले की प्राचीर से भारत के प्रधानमंत्री द्वारा डिजिटल स्वास्थ्य मिशन की घोषणा का उल्लेख करते हुए केन्द्रीय विज्ञान मंत्री ने कहा कि भारतीय नागरिकों के स्वास्थ्य इकोसिस्टम को मजबूत और सम्पूर्ण बनाने और इसके एक अभिन्न हिस्से के रूप में हमारे पारंपरिक ज्ञान को साथ लाने की दिशा में विशेष प्रयत्न किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह के परिवर्तनकारी बदलाव के समय में सीएसआईआर के संस्थान निस्पर की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि यह संस्थान नीति अनुसंधान और विज्ञान संचार के अपने महत्वपूर्ण उद्देश्यों के साथ-साथ भारत के पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक कसौटी से परखकर उसका आमजन में संचार भी कर रहा है। यह प्रयास वैज्ञानिक प्रमाण सहित पारंपरिक ज्ञान और आमजन के बीच की खाई को पाटने में अहम भूमिका निभाएगा।

इस कार्यक्रम में, केन्द्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने सीएसआईआर-निस्पर की नई वेबसाइट का लोकार्पण किया। इसके अलावा, उन्होंने टीआरएल-6 कम्पैडियम के डिजिटल और फिजिकल वर्जन, ग्रामीण आजीविका निर्माण संबंधी सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के दस्तावेज, डिस्कशन पेपर, पॉलिसी बुलेटिन और स्वस्तिक ब्रोशर का विमोचन भी किया।

इस अवसर पर डीएसआईआर, भारत सरकार के सचिव और सीएसआईआर के महानिदेशक, डॉ. शेखर चिंतामणि मांडे ने विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान के क्षेत्रों में निस्पर द्वारा निभाई जा रही महत्वपूर्ण भूमिका की सराहना की। उन्होंने कहा कि सीएसआईआर का यह नवस्थापित संस्थान



सीएसआईआर-निस्पर के पहले स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए केन्द्रीय विज्ञान मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह

निष्ठा के साथ अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल ने अपने संबोधन में पिछले एक वर्ष में संस्थान की गतिविधियों की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि सीएसआईआर-निस्पर देश में विभिन्न संस्थानों के साथ नेटवर्किंग के माध्यम से कार्यक्रम विकसित कर रहा है जो संयुक्त परियोजनाओं, चर्चा प्रपत्रों आदि जैसी गतिविधियों को लेकर आगे बढ़ रहा है। सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका के अवसर सृजित करने की दिशा में भी निस्पर काम कर रहा है। यह सीएसआईआर, उन्नत भारत अभियान (आईआईटी दिल्ली) और विज्ञान भारती की एक संयुक्त पहल है। सीएसआईआर-निस्पर इस पहल में नोडल लैब के रूप में कार्यरत है। वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित पारंपरिक ज्ञान की सम्पदा को समाज में संप्रेषित करने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम 'स्वस्तिक' का आरंभ किया गया है।

साइंस रिपोर्टर, विज्ञान प्रगति और विज्ञान की दुनिया क्रमशः अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू भाषाओं में निस्पर की 3 लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाएं हैं जिनसे विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और आमजन को विज्ञान की बातें सरल भाषाशैली से समझने में मदद मिलती है।

सीएसआईआर-निस्पर द्वारा अपने पहले स्थापना दिवस के मौके पर 14 जनवरी 2022 को दो और कार्यक्रमों के आयोजन किए गए। इनमें पहला कार्यक्रम स्थापना दिवस व्याख्यान का रहा जिसका शीर्षक "भारतीय पारंपरिक ज्ञान: एक अंतहीन निरंतरता" था। यह वर्चुअल व्याख्यान आईआईटी मुंबई के वरिष्ठ प्रोफेसर बी.एन. जगताप ने दिया।

इस अवसर पर सीएसआईआर-निस्पर



सीएसआईआर की समाजोपयोगी प्रौद्योगिकियों पर केंद्रित टीआरएल कम्पेंडियम का विमोचन



सीएसआईआर-निस्पर के प्रकाशनों का अवलोकन करते हुए माननीय मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह

की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल ने अपने स्वागत संबोधन में संस्थान के महत्वपूर्ण दस्तावेज 'भारत की संपदा' का उल्लेख भारतीय पारंपरिक ज्ञान के संदर्भ में करते हुए कहा कि इस पुस्तक श्रृंखला में देश के पौधों, जंतुओं और खनिजों की विविधता को समग्रता में लिपिबद्ध किया गया है। इसके अलावा संस्थान का जर्नल 'इंडियन जर्नल आफ ट्रेडिशनल नालेज' पारंपरिक

ज्ञान के विभिन्न विज्ञान व प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में समकालिक और गुणवत्तापूर्ण शोध प्रकाशन को सामने लाने में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है।

प्रो. अग्रवाल ने इस अवसर पर कहा कि भारत में पारंपरिक ज्ञान को अक्सर अवैज्ञानिक और तर्कहीन माना जाता है जबकि यह सर्वथा उचित नहीं है। ऐसी परिस्थिति में देश के पारंपरिक ज्ञान को

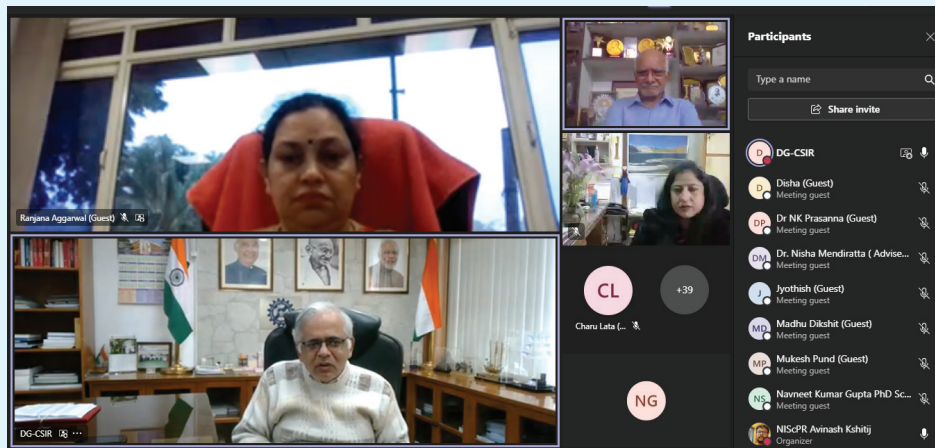
वैज्ञानिक विधि से परखते हुए संस्थान ने 'स्वस्तिक' कार्यक्रम की शुरुआत की है।

इस कार्यक्रम में सीएसआईआर के महानिदेशक डॉ. शेखर मांडे ने भारत की समृद्ध विरासत का उल्लेख करते हुए निस्पर द्वारा इस दिशा में किए जा रहे कार्यों को सराहा। उन्होंने कहा कि निस्पर को अरावली की पहाड़ियों में स्थित विरासत स्थलों के संरक्षण में पहल करना चाहिए। उन्होंने कहा कि देश में ऐसे अनेक पारंपरिक विरासत स्थल और प्रौद्योगिकियां हैं जिनका कोई दस्तावेज उपलब्ध नहीं है। इस दिशा में निस्पर अपनी भूमिका निभा सकता है।

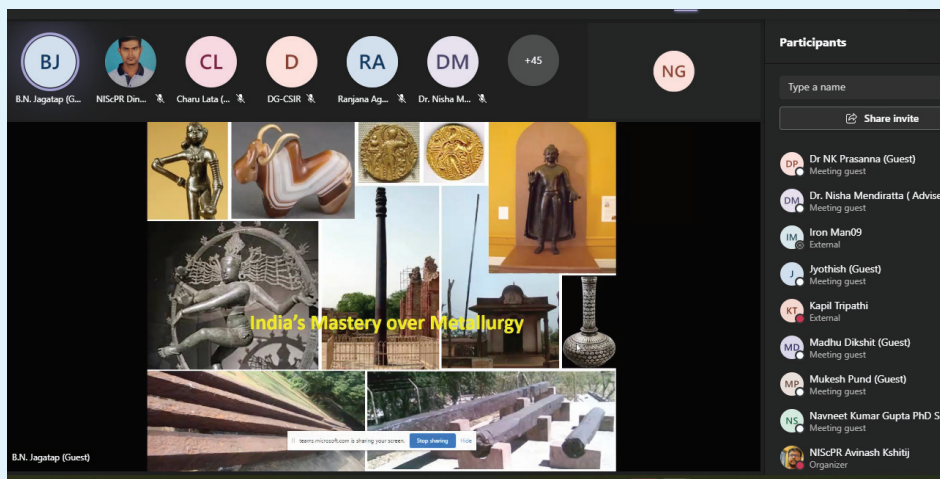
स्थापना दिवस व्याख्यान में प्रो. बी. एन. जगताप ने भारतीय ज्ञान परम्परा की व्यापक दायरे में चर्चा की। उन्होंने देश में ज्ञान-विज्ञान की परम्परा को दर्शनशास्त्र, शिक्षा, तर्क, गणित, खगोलिकी, चिकित्साविज्ञान, धातुकर्म, वास्तुकला, समुद्री जहाज निर्माण और व्यापार के नजरिये से वर्णन किया। उन्होंने बुनाई उद्योग और मलमल के क्षेत्रों में भारत की समृद्ध ऐतिहासिक विरासत की तथ्यपरक विवेचना की।

प्रो. जगताप ने अपने व्याख्यान में भारतीय जल प्रबंधन, नवाचारी कृषि फसल की नस्लों, वास्तुशिल्प, हम्पी के विरूपाक्ष मन्दिर स्थित पिनहोल कैमरा आदि के विषय में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि अनेक भारतीय हमारे देश की पारंपरिक ज्ञान-विज्ञान और कला से अपरिचित हैं इसलिए स्वस्तिक की पहल के अंतर्गत इन पारंपरिक ज्ञान-विज्ञान-प्रौद्योगिकियों के संचार की आज सख्त आवश्यकता है।

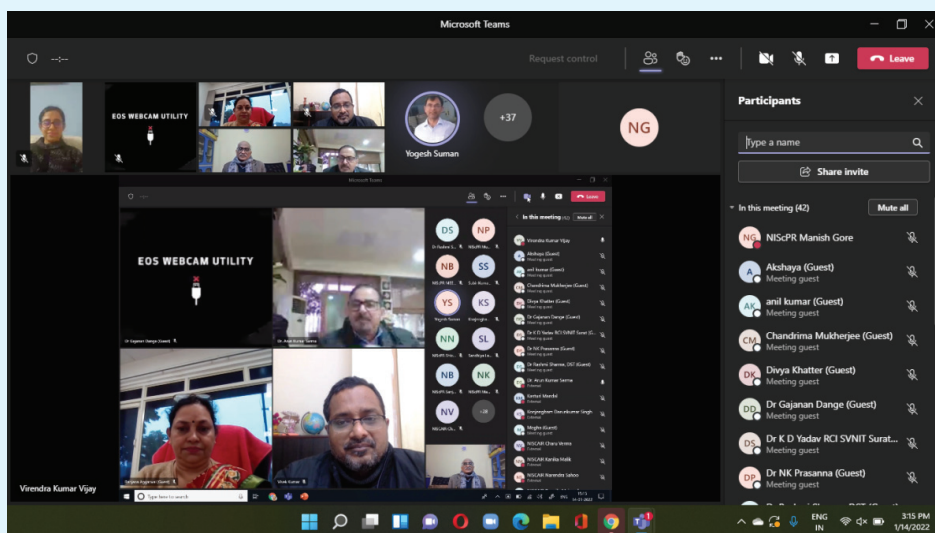
स्थापना दिवस व्याख्यान कार्यक्रम का संयोजन निस्पर के पारंपरिक ज्ञान अध्ययन अनुभाग की प्रमुख और संस्थान की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. चारु लता ने किया तथा संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. परमानन्द बर्मन ने कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव



सीएसआईआर-निस्पर के स्थापना दिवस व्याख्यान कार्यक्रम (वर्चुअल) के अवसर पर मौजूद अतिथिगण



स्थापना दिवस व्याख्यान की प्रस्तुति संबंधी एक स्लाइड की झलकी



विवार मंथन सत्र का वर्चुअल आयोजन

रखा। इस स्थापना दिवस व्याख्यान को फेसबुक लाइव के जरिये सभी के लिए लाइव स्ट्रीम किया गया था और विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों तथा प्रयोगशालाओं के 300 से अधिक दर्शकों ने इस कार्यक्रम में प्रतिभागिता की।

14 जनवरी 2022 को अपराह्न 2.30 बजे सीएसआईआर-निस्पर द्वारा स्थापना

दिवस कार्यक्रम के एक हिस्से के रूप में एक वर्चुअल विचार मंथन सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र का विषय था 'बुनियादी स्तर पर सरकारी शोध संस्थानों से लेकर समाज के भागीदारों तक प्रौद्योगिकी का प्रसार'।

इस विचार मंथन सत्र में उन्नत भारत अभियान के राष्ट्रीय संयोजक प्रो. वीरेंद्र

के. विजय, सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल और निस्पर के वैज्ञानिक डॉ. योगेश सुमन के अतिरिक्त विभिन्न विश्वविद्यालयों, विभागों, संस्थानों के विशेषज्ञों ने अपने विचार व अनुभव साझा किए।

श्री लोक नाथ शर्मा माननीय मंत्री, सिक्किम सरकार का सीएसआईआर-आईएचबीटी दौरा



श्री लोक नाथ शर्मा, माननीय मंत्री, कृषि विभाग, बागवानी, पशुपालन और पशु चिकित्सा सेवाएं, सूचना और जनसंपर्क, मुद्रण और स्टेशनरी विभाग सिक्किम सरकार ने श्री भीम लाल दहल, अतिरिक्त निदेशक, बागवानी के साथ सीएसआईआर-आईएचबीटी का 17.18 फरवरी, 2022 को दौरा किया।

श्री लोक नाथ शर्मा ने उच्च स्तरीय अनुसंधान आधारित प्रौद्योगिकियों के विकास और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए उनके परिनियोजन के माध्यम से संस्थान द्वारा किए गए

योगदान की सराहना की। संबोधित करते हुए, उन्होंने सिक्किम के लोगों के लाभ के लिए संस्थान द्वारा चलाये जा रहे विकास कार्यक्रमों को मजबूत करने के लिए प्रासंगिक प्रौद्योगिकियों, प्रशिक्षण और कौशल विकास के तेजी से परिनियोजन के लिए सिक्किम में एक सीएसआईआर-आईएचबीटी केंद्र स्थापित करने के लिए गहरी रुचि दिखाई है। हींग, केसर, भिक्षु फल और दालचीनी कृषि आरंभ करने के अलावा, उन्होंने जलीय कृषि के साथ एकीकृत मोती की खेती शुरू करने के लिए सीएसआईआर-आईएचबीटी के प्रयासों की

सराहना की। माननीय मंत्री ने कहा कि सीएसआईआर-आईएचबीटी के उनके दौरे से, हाइड्रोपोनिक्स और एरोपोनिक्स, हींग की खेती, केसर, सुगंधित और औषधीय पौधे, फूलों की खेती और खाद्य प्रसंस्करण जो किसानों, बेरोजगार युवाओं और उद्यमिता विकास के बीच क्षमता निर्माण में मदद करते हैं, सहित विभिन्न पहलुओं पर आपसी सहयोग को और मजबूती मिलेगी।

उन्होंने 'मुख्यमंत्री कृषि आत्मानिर्भर योजना' 'मुख्यमंत्री पशुधन समृद्धि योजना' और 'मुख्यमंत्री मत्स्य उत्पादन योजना'

जैसी योजनाओं की सफलता के बारे में भी बताया जिससे आम आदमी के जीवन में सुधार हुआ और सिक्किम देश का पहला जैविक राज्य बन गया। माननीय मंत्री ने संस्थान में विकसित खाद्य प्रसंस्करण, पायलट स्केल हर्बल प्रसंस्करण, एरोपोनिक और हाइड्रोपोनिक जैसे क्षेत्रों और सुविधाओं का भी दौरा किया।

डॉ संजय कुमार, निदेशक, सीएसआईआर-आईएचबीटी ने संस्थान की प्रमुख उपलब्धियों और अनुसंधान गतिविधियों को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि संस्थान उपलब्ध संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग जैसे जंगली गेंदा, डैमस्क गुलाब, लेमन ग्रास आदि सुगंधित फसलों की खेती और प्रसंस्करण के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जो किसानों को आत्मनिर्भरता और

पारंपरिक फसलों की तुलना में अधिक आय प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। उन्होंने आगे कहा कि सीएसआईआर-आईएचबीटी पूर्वोत्तर राज्यों के साथ पारंपरिक उद्योगों के पुनर्जनन के लिए कोष (एसएफयूआरटीआई) के तहत विटामिन डी 2 समृद्ध शीटकेक मशरूम और वर्मीकम्पोस्टिंग के उत्पादन के लिए तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के अवायवीय बायोगैस संयंत्र स्थापना के माध्यम से अपशिष्ट प्रबंधन प्रौद्योगिकी (डब्ल्यूएमटी) और सीएसआईआर अरोमा मिशन के तहत और आवश्यक तेल प्रसंस्करण इकाई की स्थापना हेतु क्लस्टर विकसित करके काम कर रहा है।

डॉ कुमार ने बताया कि सीएसआईआर-आईएचबीटी ने प्रशिक्षण और कौशल विकास

के माध्यम से मोती खेती को बढ़ावा देने और इस उच्च आय पैदा करने वाले उद्यम में किसानों, उद्यमियों/स्टार्टअप को सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से ताजे पानी के मसल्स का उपयोग करते हुए मोती संस्कृति पर अनुसंधान और विकास गतिविधि शुरू की है।

माननीय मंत्री, सीएसआईआर-आईएचबीटी और बागवानी विभाग, सिक्किम सरकार के दौरे के दौरान 18 फरवरी, 2022 को समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौता ज्ञापन का मुख्य उद्देश्य सिक्किम के लोगों के लिए अधिक राजस्व पैदा करने वाले आजीविका विकल्प बनाना और सीएसआईआर-आईएचबीटी में विकसित ग्रामीण विकास प्रौद्योगिकियों का परिनियोजन करना है।

सीएसआईआर-सीरी में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर ऑनलाइन काव्य-गोष्ठी का आयोजन

कवियों ने काव्य पाठ से देश की भाषायी विविधता की सुंदर झलक दिखाई

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर सीएसआईआर-सीरी में 21 फरवरी, 2022 को काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। ऑनलाइन आयोजित की गई इस काव्य संध्या में संस्थान के पूर्व सहकर्मियों व उनके परिजनों के साथ-साथ सीएसआईआर मुख्यालय के साथी और संस्थान के वर्तमान कर्मिकों ने हिन्दी सहित भारत की विभिन्न प्रांतीय भाषाओं व बोलियों में काव्य रचनाएँ प्रस्तुत कीं। काव्य गोष्ठी का आयोजन वर्चुअल रूप से किया गया था जिसमें संस्थान में कार्यरत कर्मिकों के अलावा उनके परिजनों ने भी श्रोताओं के रूप में कविताओं का आनंद लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने की।



संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी एम एस टीम्स के माध्यम से काव्य गोष्ठी से जुड़े थे।

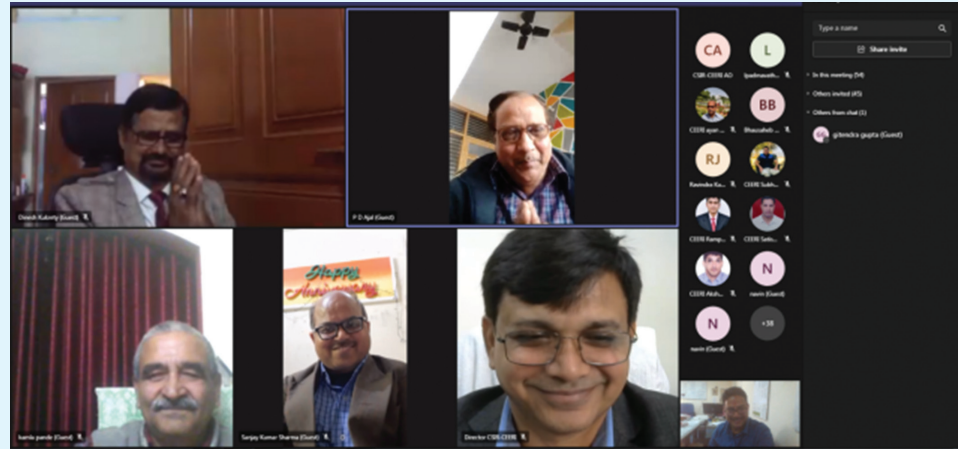
अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ पी सी पंचारिया ने अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाए जाने की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। देश की बहुभाषी संस्कृति को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि अनेकता में एकता ही हमारे देश की विलक्षण विशेषता है और मुझे विश्वास है कि आज का यह आयोजन इसे सार्थक सिद्ध करेगा। डॉ पंचारिया ने अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने के उद्देश्यों पर चर्चा करते हुए कहा कि संविधान की 8वीं अनुसूची में उल्लिखित 22 भाषाओं के अलावा हमारी अन्य भाषाएं और बोलियां भी भारत के भाषा रूपी गुलदस्ते के सुंदर फूल हैं। उन्होंने कहा कि अनेक बोलियां और भाषाएं या तो बहुत कम या उपयोग में लाए जाने के कारण विलुप्त होने की कगार पर हैं, इसलिए मातृभाषा दिवस के आयोजन के माध्यम से उन भाषाओं व बोलियों को जीवित रखने का भी प्रयास किया जा रहा है।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर काव्य संध्या का आयोजन दो खंडों में किया गया। काव्यसंध्या के प्रथम खंड में कवि प्रतिभागियों ने संस्कृत, तमिल, तेलुगू, उड़िया, बांग्ला, गढ़वाली, कुमाऊंनी, मैथिली, राजस्थानी आदि भाषाओं एवं बोलियों तथा दूसरे खंड में कवियों ने स्वरचित एवं अन्य कवियों की हिन्दी रचनाओं को पढ़ा।

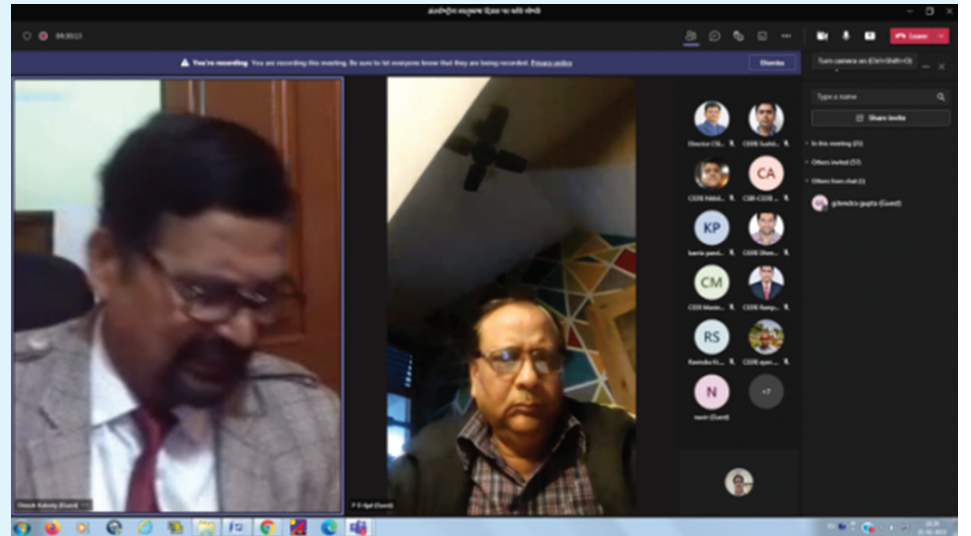
मातृभाषा खंड में श्रीमती कमला पांडे (पत्नी श्री नरेश कुमार पांडे) और श्रीमती इंदिरा जोशी (पत्नी डॉ एलएम जोशी ने) अपने मधुर स्वर में कुमाऊंनी, डॉ एल पद्मावती ने तमिल, डॉ अयन बंद्योपाध्याय ने बांग्ला, डॉ रविंद्र झा ने मैथिली, डॉ बी ए बोत्रे ने मराठी, डॉ साई कृष्णा वडाडी ने तेलुगू, डॉ एम संतोष



काव्य गोष्ठी के दौरान अध्यक्षीय संबोधन देते हुए डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी



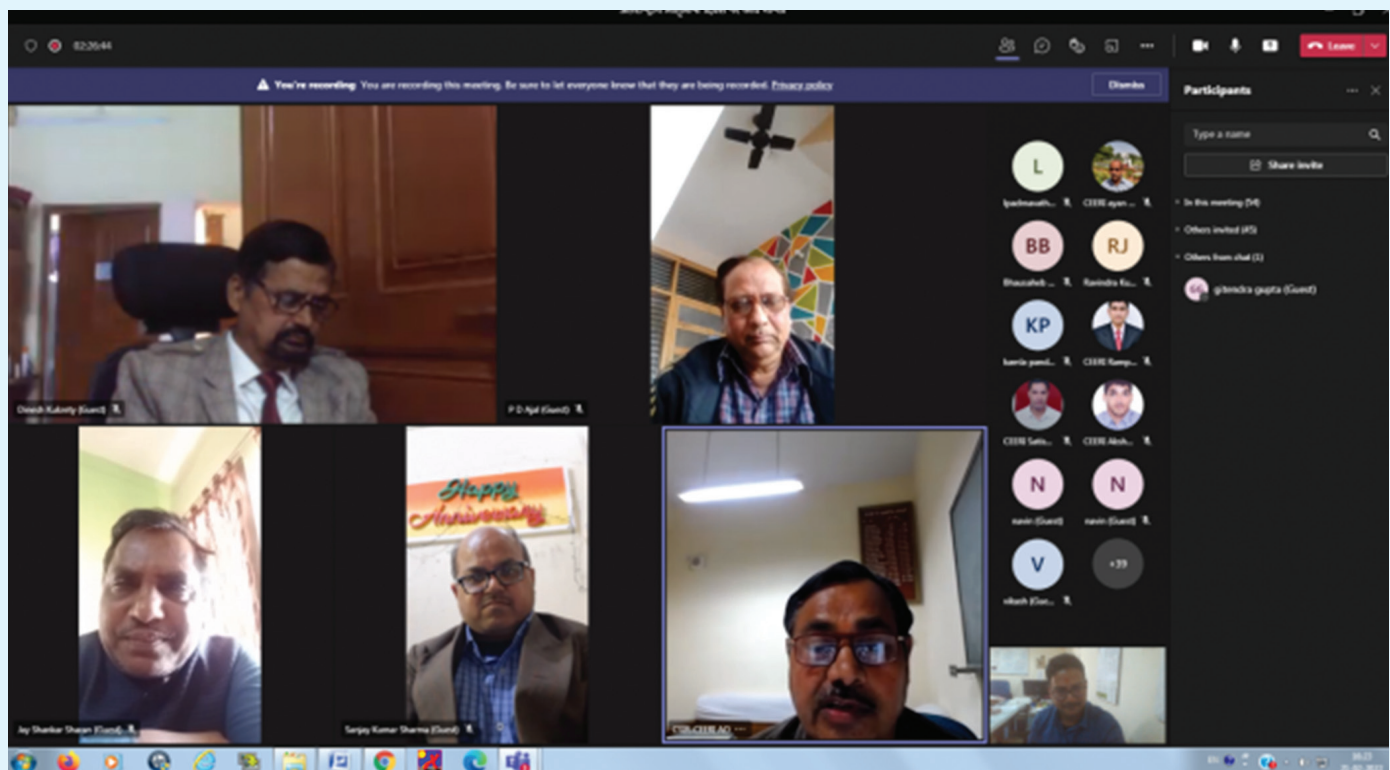
कविताओं का आनंद लेते हुए डॉ पी सी पंचारिया एवं श्रोतागण



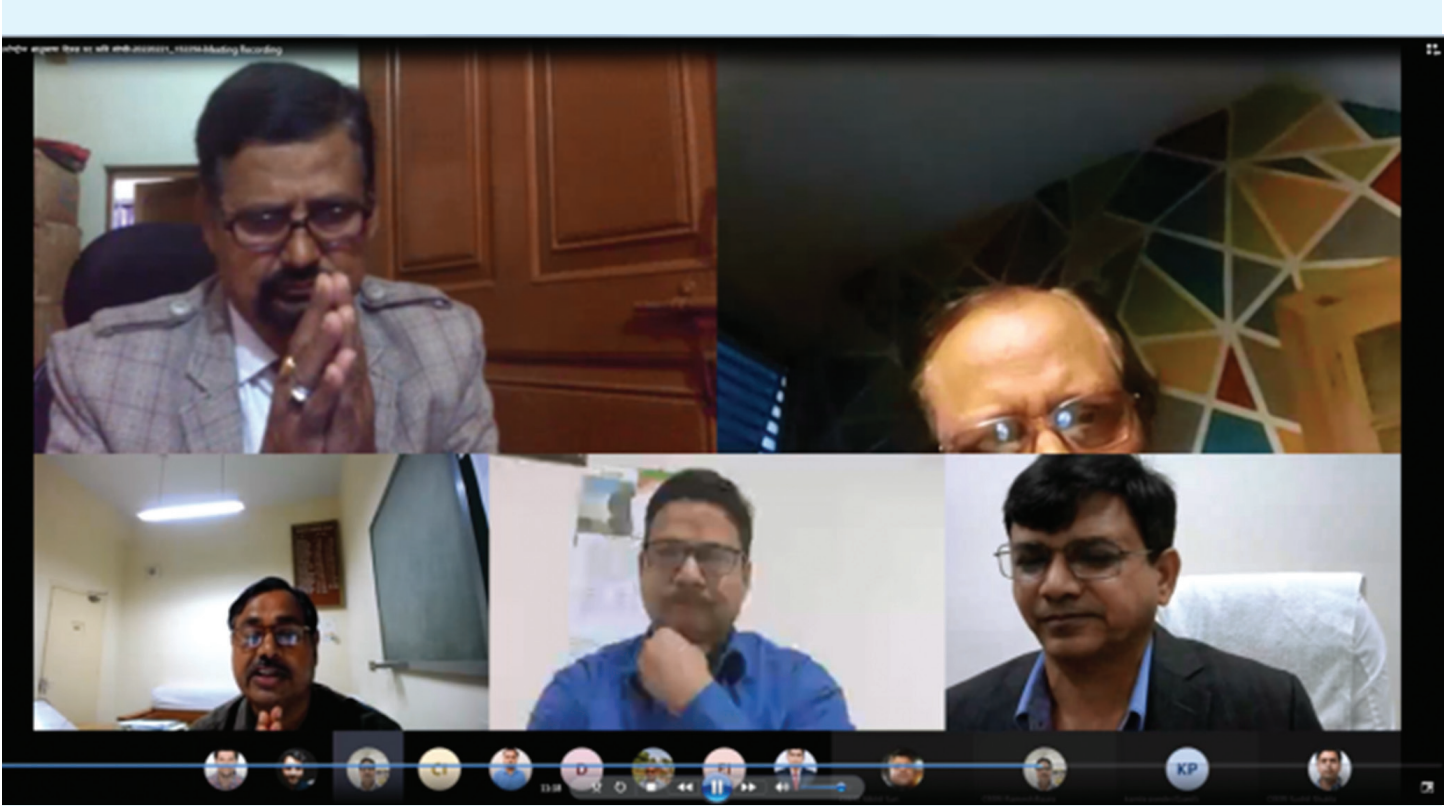
कविता पाठ करते हुए श्री दिनेश कुमार कुकरेती



कविता पाठ के दौरान श्री प्रभुदयाल अजल के मुक्तकों का आनंद लेते हुए श्री दिनेश कुकरेती, श्री रमेश बौरा एवं अन्य श्रोतागण



कार्यक्रम संचालन के दौरान अंतराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के बारे में बताते हुए श्री रमेश बौरा, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी



धन्यवाद ज्ञापित करते हुए प्रशासनिक अधिकारी श्री महेन्द्र सिंह

कुमार ने उड़िया तथा श्री महेन्द्र सिंह, श्री संजय शर्मा व श्री मुरलीधर ने राजस्थानी रचनाओं से मातृभाषा दिवस पर आयोजित इस कार्यक्रम में भारत की बहुभाषी संस्कृति की सुंदर झलक दिखाई।

संस्थापन के पूर्व सहकर्मियों श्री दिनेश कुकरेती, पूर्व प्रबंधक, सीरी कैफेटेरिया और श्री प्रभुदयाल अजल, पूर्व वरिष्ठ अधीक्षण अभियंता ने अपने कविता पाठ से श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। श्री दिनेश कुमार कुकरेती ने 'सुमुखिनी अगर मुख पखारा न होता, सिंधु का नीर खारा न होता', 'घर-अँगन सजा लो, हर तपन मिटा लो, बगिया में खिले गुलशन तुम चमन सजा लो' और 'रक्तरंजित खड्ग की सौगंध लेकर बोलता हूँ, मैं हिमाला के शिखर पर शत्रुबल को तोलता हूँ' के अलावा गढ़वाली गीत सुनाकर श्रोताओं की वाहवाही लूटी। श्री प्रभुदयाल अजल ने ब्रजभाषा में गंगू तेली की व्यथा, और

मेरी बीवी मेरे बिना खाना नहीं खाती, के अलावा हिन्दी मुक्तकों व कविताओं से हास्यक-व्यंग्य की छटा बिखेरी। सीरी विद्या मंदिर के वरिष्ठ आचार्य श्री संजय शर्मा ने राजस्थानी कविता के अलावा हिन्दी व संस्कृत में भी अपने मुक्तकों व काव्य रचनाओं से काव्य संध्या को सजीव बनाया।

इसके अलावा श्री सुदेश कुमार (सीएसआईआर मुख्यालय) ने 'मैंने प्रीतम सहे सितम जो तुमने मुझ पर किए हुए हैं, फिर भी मेरे नयन तुम्हारे लिए कमल से खिले हुए हैं' डॉ सुशील शुक्ल ने संदीप द्विवेदी की कविता 'यदि राम सा संघर्ष हो' और स्वरचित 'सूरज और बादल की लड़ाई' पढ़ कर श्रोताओं की सराहना बटोरी। श्रीमती मंजू शरण 'मंजुल' (पत्नी श्री जयशंकर शरण) ने 'खिल उठे हैं पुष्प सारे, मन मादकता को पा रहा' से वसंत ऋतु का स्वागत किया। श्री महेन्द्र सिंह ने श्री सत्यनारायण गोयनका

द्वारा राजस्थानी वीरांगना पन्नाधाय पर लिखी 'चल पड़ा दुष्ट बन वीर क्रूर जैसे कलियुग का कंस चला' और राजस्थानी भाषा की 'इनरो इतिहास अनूठो है, ऐ राजस्थानी भाषा है' पढ़ी। डॉ निखिल सूरी ने 'सारे देशों से अलग जिस देश की शान है, वह मेरा हिन्दुस्तान है' पढ़कर भारतवर्ष की महिमा बताई। श्री किशन लाल ने 'बच्चों का पहला शब्द है हिन्दी' के माध्यम से हिन्दी भाषा की महिमा गाई। डॉ जयगोपाल पांडेय ने रामधारी सिंह दिनकर की कविता 'कृष्ण की चेतावनी' का पाठ किया। कुरक्षिता पूनिया (पुत्री डॉ सुमित्रा सिंह) ने जोशीले अंदाज में श्री आशुतोष राणा की कविता 'हे भारत के राम जगो' का वाचन किया। कु. प्रीति पाल (पीएचडी छात्रा) पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा रचित 'कदम मिलाकर चलना होगा' पढ़ कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

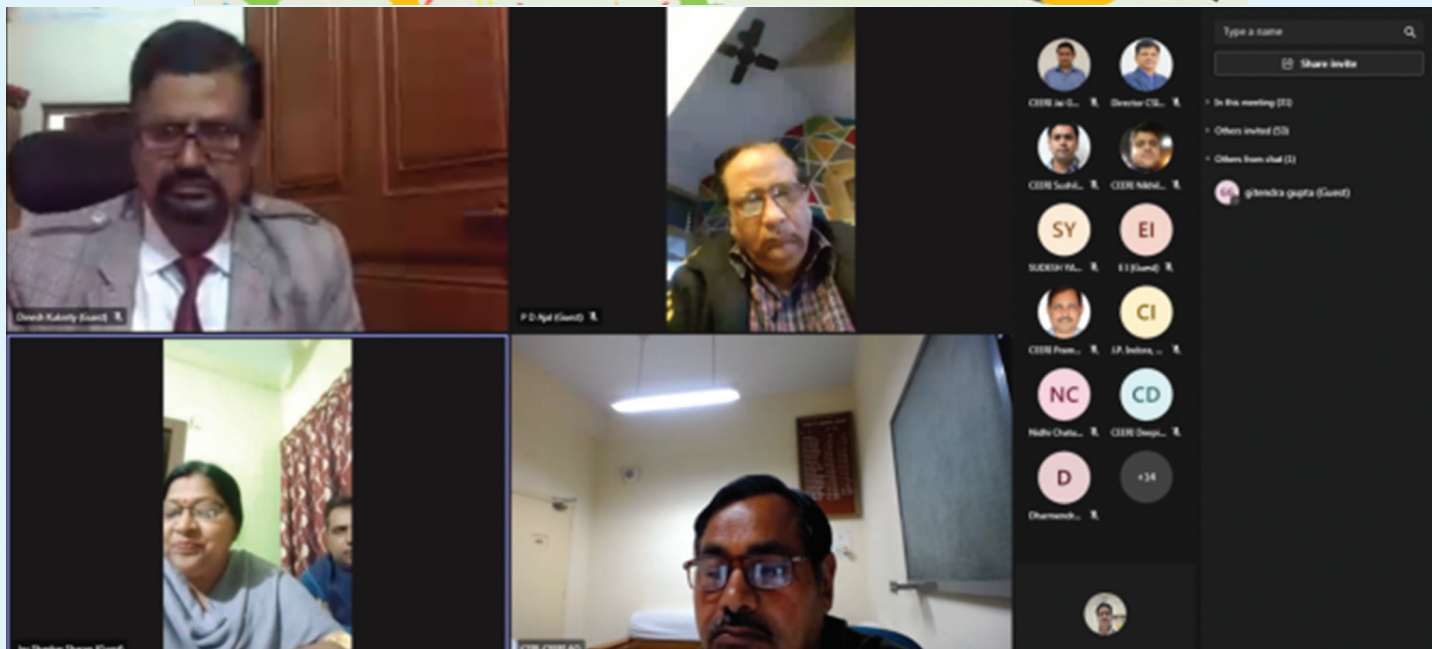
कार्यक्रम का संचालन संस्थान के मीडिया एवं जनसंपर्क यूनिट के प्रमुख श्री रमेश बौरा, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी ने किया। कार्यक्रम संचालन के दौरान उन्होंने सभी कवियों व श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि बंगलादेश के भाषा आंदोलन को मान्यता देते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस घोषित किया। श्री जयशंकर शरण,

प्रशासन नियंत्रक ने भी काव्य पाठ करने वाले कवियों को साधुवाद दिया और सफल आयोजन के लिए राजभाषा प्रकोष्ठी की सराहना की।

कार्यक्रम के समापन से पूर्व डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने कार्यक्रम के आयोजन की संकल्पना तैयार करने व इसे मूर्तरूप देने के लिए राजभाषा प्रकोष्ठ की सराहना की तथा कविता पाठ

में सम्मिलित होने वाले सभी कवियों और श्रोताओं को साधुवाद दिया।

अंत में श्री महेन्द्र सिंह, प्रशासनिक अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि संस्थान के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में भारत की बहुभाषी संस्कृति की झलक देखने को मिली।



कार्यक्रम के कुछ अन्य चित्र

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन सीएसआईआर – आईआईसीबी में



संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस एम एस टीम के माध्यम से 21 फरवरी, 2022 (सोमवार) को मनाया गया। इस वर्ष कोरोना काल (महामारी) एवं सोशल डिस्टेंसिंग आदि को ध्यान में रखते हुए एम एस टीम के माध्यम से संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. शुभजित विश्वास द्वारा एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर संस्थान के निदेशक, डॉ. अरुण

बंद्योपाध्याय ने सभी का स्वागत करते हुए, डॉ. विश्वास की उपलब्धियों के बारे में बताकर कार्यक्रम का आरंभ किए।

संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. शुभजित विश्वास ने 'आज की दुनिया में कोविड सुरक्षा नियमों का महत्व' से सबको अवगत कराया। यह वायरस कहां से शुरू हुआ और कैसे उत्परिवर्तित (mutate) हुआ और आज कहां है, इस वायरस से पूरी दुनिया कैसे प्रभावित हुई। वायरस को फैलने से कैसे रोकें। कैसे

हमें कोविड के नियमों का पालन करना है और हमें कैसे वायरस का प्रसारक नहीं बनना है। इन विषयों से अवगत करते हुए डॉ. विश्वास ने सभी को जागरूक किया।

अन्त में संस्थान के हिंदी अधिकारी श्रीमती अम्बालिका नाग द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित इस विशेष व्याख्यान का समापन हुआ।

सीएसआईआर-निस्पर ने भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञान संचार के उद्देश्य से कार्यशालाओं का आयोजन किया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर), नई दिल्ली ने भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञान संचार के मूल्यांकन के लिए 22-23 फरवरी 2022 के दौरान दो वर्चुअल कार्यशालाओं का आयोजन किया। गतिविधियों के इस पहले चरण में, हिंदी और असमिया भाषाओं को लिया गया, अन्य भारतीय भाषाओं को आगे के चरणों में जोड़ा जाएगा। कार्यशाला का केंद्रीय विषय "विज्ञान संचार और लोकप्रिय

विज्ञान लेखन में अध्ययन: आकलन और भविष्य की जरूरतें" था। इन कार्यशालाओं में हिंदी और असमिया दोनों भाषाओं में विज्ञान संचार और लोकप्रिय विज्ञान लेखन के विशेषज्ञों ने अपनी आमंत्रित वार्ता दी। ये वार्ता प्रतिभागियों के लिए अंतर्दृष्टिपूर्ण और प्रेरक थीं। कार्यशाला में स्वयं सीखे अभ्यास भी किया गया। इसके प्रत्युत्तर में प्रतिभागियों ने स्वयं को व्यक्त किया और बहुत अच्छे लेखन कार्य का प्रदर्शन किया।

विज्ञान संचार और एसटीआई आधारित नीति अनुसंधान सीएसआईआर-निस्पर के दो प्रमुख उद्देश्य हैं। क्षेत्रीय भाषा पहल की शुरुआत संस्थान के नव स्थापित डिजीजन विज्ञान संचार में अध्ययन द्वारा की गई थी।

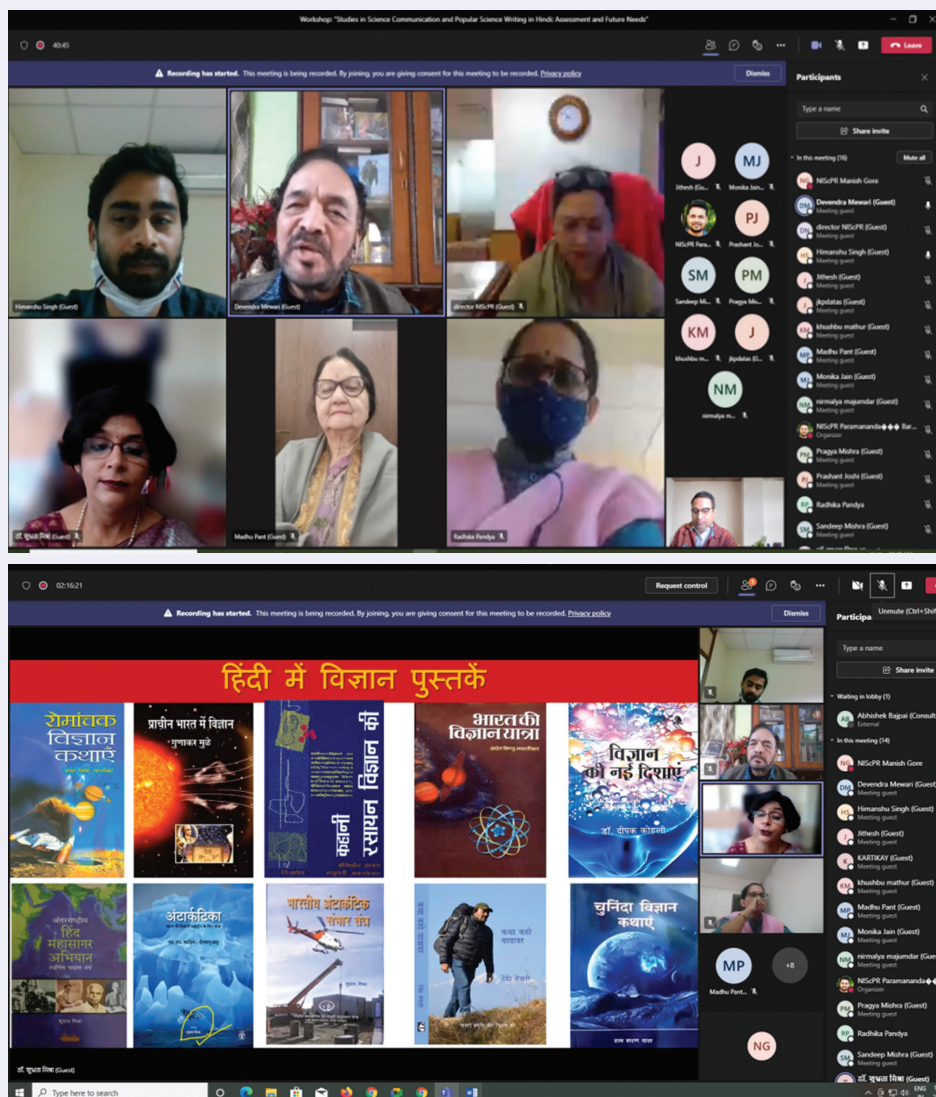
भारत विविध भाषाओं का देश है और इस प्रक्रिया को समावेशी बनाने के लिए भारतीय भाषाओं में विज्ञान का संचार करना महत्वपूर्ण है। भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञान संचार के प्रयास पर्याप्त

नहीं हैं! इस तथ्य पर विचार करते हुए कि हमारी अधिकांश आबादी अंग्रेजी बोल और लिख नहीं सकती है जो कि देश में विज्ञान संचार गतिविधियों के लिए उपयोग की जाने वाली सामान्य भाषा है। इसलिए, विज्ञान संचार के लक्ष्यों को पूरा करने और भाषा की बाध्यता को तोड़ने के लिए भारतीय भाषाओं में सशक्त प्रयासों की आवश्यकता है।

हाल के वर्षों में, विज्ञान संचार और लोकप्रिय विज्ञान साहित्य में कई परिवर्तन हुए हैं। पिछले कुछ दशकों में आवश्यकता, प्रस्तुति, लोगों की धारणा और परिणामों के मापदंडों में व्यापक बदलाव किया गया है। वर्तमान में हितधारकों और लक्षित दर्शकों का क्षितिज ज्ञान परिधि में व्यापकता आयी है। विज्ञान संचार और लोकप्रिय विज्ञान लेखन के लक्ष्य भी विस्तीर्ण हो रहे हैं। युवाओं के बीच विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कौशल का हस्तक्षेप और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सूचना के प्रसार का उपयोग अब समाज के उपेक्षित के वर्गों की आजीविका के उत्थान के लिए किया जा रहा है। सोशल मीडिया ने जनता के बीच विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विज्ञान संचार के क्षेत्र में साहित्य और अध्ययन कई अंतर्दृष्टि उत्पन्न करते हैं।

क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञान संचार और लोकप्रिय विज्ञान लेखन की भविष्य की आवश्यकताओं का आकलन करने के साथ-साथ प्रारूपों, संचार माध्यमों, चुनौतियों और लोगों के दृष्टिकोण पर चर्चा करना आवश्यक है।

इसके अलावा, सीएसआईआर-निस्पर ने आने वाले समय में “हिंदी और असमिया में विज्ञान संचार में अध्ययन: वर्तमान परिदृश्य और आगे की राह” विषय पर दो विचार-मंथन बैठकें आयोजित करने की भी योजना बनाई। प्रस्तावित ऑनलाइन विचारावेश बैठक विज्ञान संचार के विभिन्न



हितधारकों के बीच संवाद को उत्प्रेरित करेगी। यह वर्चुअल विचारावेश बैठक हिंदी और असमिया भाषाओं के विज्ञान संचार विशेषज्ञों को शामिल करते हुए आयोजित की जाएगी। विभिन्न जनसंचार माध्यमों के बीच चयनित क्षेत्रीय भाषाओं (हिंदी और असमिया) में विज्ञान का संचार करते समय बातचीत विज्ञान संचार में अध्ययन की वर्तमान स्थिति और प्रमुख चुनौतियों बाधाओं को रेखांकित करेगी। यह सार्वजनिक दृष्टिकोण, वैश्विक और भारतीय प्रवृत्तियों और भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञान संचार पहल, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण

की आवश्यकता पर भी चर्चा करेगा। इन चर्चाओं से क्षेत्रीय भाषाओं में प्रभावी विज्ञान संचार के लिए नीतिगत सिफारिशों का मसौदा तैयार करने में मदद मिलेगी।

आने वाले वर्षों में, सीएसआईआर-निस्पर द्वारा और अधिक गतिविधियों को कार्यान्वित करने की योजना बनाई गई है। भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञान संचार के प्रवेश की तत्काल आवश्यकता है और इस तरह के प्रयास से देश में चयनित क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञान संचार को गति मिलेगी।

सी.एस.आई.आर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र एवं सी. एस. आई. आर. मद्रास कॉम्प्लेक्स में विश्व हिन्दी दिवस समारोह आयोजित

सी.एस.आई.आर. मद्रास कॉम्प्लेक्स और सीएसआईआर – संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र चेन्नै के तत्वावधान में संयुक्त रूप से विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन दिनांक 10.01.2022 को किया गया। विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर सभी वैज्ञानिकों एवं पी.एच.डी छात्र/छात्राओं के लिए विशेष वैज्ञानिक पोस्टर प्रस्तुतिकरण एवं हिन्दी में शोध पत्र प्रस्तुतिकरण करने के अलावा विभिन्न हिन्दी कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया।

विश्व हिन्दी दिवस समारोह – 2022 का शुभारंभ 11 जनवरी, 2022 को सीएसआईआर मद्रास कॉम्प्लेक्स के सम्मेलन कक्ष में पूर्वाह्न 11.00 बजे दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ।

सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र के प्रधान वैज्ञानिक डॉ अमर प्रकाश ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र के निदेशक एवं सी.एस.आई. आर. मद्रास कॉम्प्लेक्स के समन्वय निदेशक महोदय डॉ (श्रीमती) एन. आन्नदवल्लू ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सर्वप्रथम सभी कार्मिकों को विश्व हिन्दी दिवस का हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई दिया। अपने अध्यक्षीय भाषण में विश्व हिन्दी दिवस के महत्व एवं आवश्यकता के बारे में बताते हुए कहा कि भारत दुनिया में सब से विभिन्न संस्कृतियों वाला देश है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा ही नहीं बल्कि राजभाषा भी है। दुनिया में हिन्दी भाषा तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिन्दी भारत में

ही नहीं बल्कि भारत के बाहर पाकिस्तान, भूटान, नेपाल, बंगलादेश, श्रीलंका, मालदीव, म्यांमार, इंडोनेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड, चीन, जापान, ब्रिटेन, जर्मनी, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, मॉरिशस, यमन, युगांडा और त्रिनाड एंड टोबैगो, कनाडा आदि देशों में बोली जाती है साथ ही साथ उन्होंने यह भी बताया कि फिजी, दक्षिण प्रशांत महासागर के मेलोनेशिया द्वीपका भी आधिकारिक भाषा हिन्दी है। विश्व हिन्दी दिवस के माध्यम से पूरे विश्व को एक सूत्र में बाँधने की कोशिश की जा रही है विश्वभर में हिन्दी का विकास करने और इसके प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य से विश्व हिन्दी सम्मेलनों की शुरुआत की गई। इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य हिन्दी भाषा को जन-जन तक पहुँचाना



और अंतराष्ट्रीय दर्जा दिलाना है। भारत की राजभाषा और अत्यधिक जनता द्वारा बोली एवं समझी जाने वाली हिन्दी भाषा में वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी उपलब्धियों को अवगत कराना अत्यंत आवश्यक है। इस उद्देश्य का साकार रूप देने के लिए वैज्ञानिक विषयों का प्रस्तुतीकरण देने पर जोर दे रहे हैं। सीएसआईआर मद्रास कॉम्प्लेक्स के प्रधान तकनीकी अधिकारी श्री पी. सुरेश ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया तथा सभी उपस्थित कर्मिकों से राजभाषा कार्यान्वयन में अपना सहयोग प्रदान करने का अनुरोध किया और इन कार्यक्रम का संचालन संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र के हिन्दी अधिकारी श्रीमती एम. वाणी सत्यनारायणा किया।

इसके उपरान्त कार्यक्रम के प्रथम सत्र में वैज्ञानिकों एवं पी.एच.डी. छात्र/छात्राओं ने विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर अपने शोध या अपने प्रयोगशाला में हो रही शोध प्रगति पर पोस्टर प्रस्तुत करके के उसके बारे में सम्पूर्णविवरण हिन्दी में प्रस्तुत किया ताकि हिन्दी भाषा में यह शोध जन-जन तक पहुँच सके। यह कार्यक्रम कोविड-19 महामारी के दिशानिर्देशों का पालन करते हुए ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों सेमाध्यम आयोजित किया गया। अपनी प्रस्तुतीकरण करने वाले वैज्ञानिकों एवं पी.एच.डी. छात्र/छात्राओं ऑफलाइन के माध्यम से और अन्य कर्मिकों के लिए सीधा प्रसारण एमएसटीम्स के द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में 29 प्रतिभागियों ने भाग लेकर सफल बनाने में सहयोग दिया। यहाँ तक कि एक पी.एच.डी. छात्रा जिनकी मातृभाषा तमिल होते हुए भी वह अपनी शोध राजभाषाहिन्दी में प्रस्तुत की। कार्यक्रम के अपराह्न में सभी कर्मिकों के लिए मौखिक प्रस्तुतिकरण सत्र रखा गया था जिसमें सभी कर्मिकों के लिए कविता पाठ, संगीत,



सी.एस.आई.आर.— एसईआरसी के निदेशक एवं मद्रास कॉम्प्लेक्स के समन्वय निदेशक महोदया दीप प्रज्वलित करते हुए



सी.एस.आई.आर.—एसईआरसी एवं मद्रास कॉम्प्लेक्स के रा.भा.का.स. के उपाध्यक्ष श्री पी. सुरेश दीप प्रज्वलित करते हुए



विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर निदेशक महोदया अध्यक्षीय भाषण देते हुए



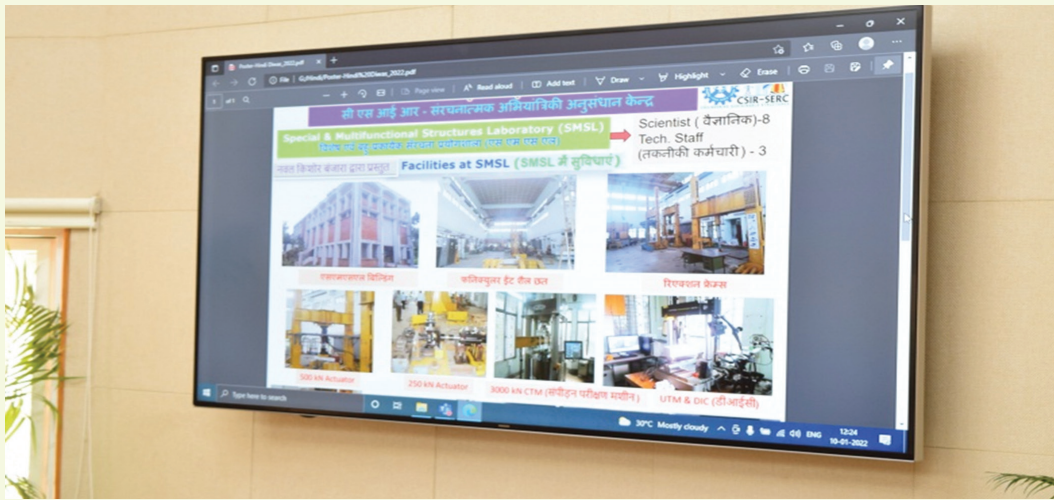
कार्यक्रम का संचालन करते हुए सी.एस.आई.आर.—एसईआरसी के हिन्दी अधिकारी श्रीमती एम. वाणी सत्यनारायणा

चुटकुलें, लोकोक्ति, आदि विषय को प्रस्तुत करने के लिए अनुरोध किया गया। कार्यक्रम में कुछ कर्मिकों ने देश भक्ति गीत गाये, तो कुछ ने देश की आजादी से संबंधित कविता पाठ किया तो कुछ ने चुटकुलें। इसके अलावा एक वैज्ञानिक ने राजस्थान

की लोककथा कथा सुना कर उससे संबंधित प्रश्न पूछा और उसका स्पष्टिकरण करते हुए उसका उत्तर भी दिया। कार्यक्रम के अंतिम चरण में सी.एस.आई.आर. मद्रास कॉम्प्लेक्स और सीएसआईआर.—संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र



धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए सी.एस.आई.आर.-एसईआरसी और सीएमसीके रा.भा.का.स. के उपाध्यक्ष श्री पी. सुरेश



वैज्ञानिक प्रस्तुतिकरण का एक झलक

चेन्नई के संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति के उपाध्यक्ष श्री पी. सुरेश ने आजादी के अमृत महोत्सव से संबंधित

कविता का पाठ किया। इन सभी कार्यक्रमों का संचालन सी.एस.आई.आर. मद्रास कॉम्प्लेक्स के कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री

श्यामल कुमार गौड़ ने किया। राष्ट्र गान के साथ के कार्यक्रम समापन हुआ।